पंकज मिश्र 'अटल'
लखीमपुर खीरी

एक सवाल है चिड़िया

अब भी
बैठकर मुंडेर पर
परंपरावादी ढंग से
कुछ कहती है चिड़िया,
आँखों में लेकर आकाश और
तलाश में झील की
हर क्षण है भटकती
और ढूंढ़ती है
डैनों में एक विस्मृत उड़ान,
फुदकती है
गमले में सीना ताने
हुए कैक्टस पर
कुछ जंगली अंदाज़ में,
ताकती है सीनरी में
दूसरी चिड़ियों को
और ढूंढ़ती है
उनके बीच अपने लिए
एक सुरक्षित स्थान,
भर लेना चाहती है
आँखों में
कमरे के बदले परिवेश को,
और तभी
खो जाती है कमरे की सीलिंग में
ताकते हुए उसे एकटक
घूरती है,
आँगन की दूसरी चिड़ियों को
नहीं पहचान पाती है उन्हें
उड़ती है
कमरे के तकनीकी आकाश में
बन चुकी है एक प्रश्न
संघर्षरत है
तथाकथित अंधेरे के खिलाफ़
पर,
सिमट आना पड़ता है
हर शाम
किताबी पन्नों में
बन कर कुछ धुंधले स्याह अक्षर,
एक सवाल है चिड़िया
सारे आकाश के सामने
ताकती है
हर सुबह अपनी ही आँखों में
और डूब जाती है उनमें
शाम आने तक,
उछाल देती है
कुछ शब्द नारों की तरह
फिर अगली सुबह
गूंगी ऊंचाइयों में,
नहीं है कोई हल
बस एक अदद सवाल है
सारे आकाश के सामने
यह चिड़िया।